

जीना क्यों

जब उन्होंने मुझसे पूछा कि जीवन क्या है, मैंने साफ़-साफ़ कहा — अपने नज़रिए से — कि इसे एक सच्चे एल्गोरिद्म की तरह बताया जा सकता है। उसके भीतर, दो सिरे जन्म और मृत्यु।

बहुत लोग मुस्कराए। लगभग मेरा मज़ाक़ उड़ाते हुए, मानो जवाब स्पष्ट हो। पर आदमी स्वभाव से ही उलझन ढूँढ़ता है। उलझन केज़रिए ही उसे चीज़ों का महत्व समझ आता है। जैसे वे तमाम किताबें जो अमेज़न बेचता है — कम्प्यूटरों से लिखवाई गई, क्योंकि मुझ जैसे लेखकों ने इनकार कर दिया।

पर इनमें से कुछ भी उन तमाम लोगों की नज़रों में सच्चा या असली नहीं लगता, जो लगातार आगे बढ़ते रहने की ज़रूरत और लाचारी दोनों दिखाते हैं — बजाय इसकेकि वे बिना किसी नियंत्रण केकाँटेदार तार की बाड़ में फंसे रहें, केवल अपने ही मन के शिकार।

फिर अभ्यास सरल हो जाता है। जब कहते हैं: मुझे बताओ तुम कहाँ जा रहे हो, मैं बता दूंगा तुम कौन हो। या: मुझे बताओ तुम किसकेसाथ चलते हो, मैं बता दूंगा तुम कौन हो। या: जो लंगड़े केसाथ चलता है, देर-सवेर लंगड़ाने लगता है।

समाधान वही रहता है। हर किसी की जेब में। अपने ही फ़ैसलों केसाथ अकेले रहो — यह याद रखते हुए कि हमसे ज़्यादा हमें कोई नहीं प्यार करता, जितना हम खुद को करते हैं।

नान्दो

Ferdinando Frega — gillettenarrative.com